

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मानवता और पाप, सत्र 18, मूल पाप, केल्विनवाद, पेलागियनवाद, आर्मिनियनवाद और केल्विनवाद की ताकत और कमजोरियाँ

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 18 है, मूल पाप, केल्विनवाद, पेलागियनवाद, आर्मिनियनवाद और केल्विनवाद की ताकत और कमजोरियाँ।

हम अपने व्याख्यान जारी रखते हैं, और मुझे इंजीलवादी, धर्मशास्त्री और उन्मूलनवादी चार्ल्स फिन्नी द्वारा इस्तेमाल किए गए एक दृष्टांत की याद आई, जिनके धर्मशास्त्र से मैं कई मायनों में सहमत नहीं हूँ, जो मनुष्यों पर पाप के प्रभावों के बारे में है।

यह इंजील आर्मिनियनवाद को स्थापित करने में मदद करता है। यही बात मुझे इसके बारे में सोचने पर मजबूर करती है, और यहाँ तक कि हमारे लिए सबसे अच्छा रोमन कैथोलिक धर्म भी है, जैसा कि हम इन चीजों के बारे में सोचते हैं। फिन्नी ने पश्चिमी न्यूयॉर्क राज्य के तथाकथित जले हुए जिले, नियाग्रा फॉल्स क्षेत्र में सेवा की, और उन्होंने खुद नियाग्रा नदी में एक व्यक्ति के इस दृष्टांत का इस्तेमाल किया, जो झरने की ओर बढ़ रहा था, मुसीबत में था। क्योंकि अगर वह झरने से आगे निकल जाता है, तो वह मर चुका है।

दृष्टांत में, परमेश्वर भूमि पर कोई है जो उसकी सहायता करने की पेशकश कर रहा है। और फिन्नी ने चार स्थितियों के बीच अंतर किया। एक ओर, पेलागियनवाद एक मोनेरगिस्टिक स्थिति थी।

दूसरी ओर, ऑगस्टिनियनवाद एक मोनेरगिस्टिक स्थिति थी। पेलागियनवाद के मोनेरगिज्म ने कहा कि पानी में मुसीबत में फंसा व्यक्ति वास्तव में मुसीबत में नहीं था; वह बस तैरकर बाहर निकल सकता था। उसके पास खुद को बचाने, खुद को बचाने की क्षमता थी।

यह केवल मानव जाति का एकेश्वरवाद है। ईश्वर की आवश्यकता नहीं है। वैज्ञानिक वर्गीकरण के खाते के दूसरी तरफ, हमारे पास एक और एकेश्वरवाद है, ऑगस्टिनियनवाद।

इस मामले में, वह व्यक्ति बेहोश है। उसके पास खुद की मदद करने का कोई रास्ता नहीं है, लेकिन भगवान पहल करते हैं, कूद पड़ते हैं, उसे पकड़ते हैं, बाहर खींचते हैं, उसे सीपीआर देते हैं, और उसकी जान बचाते हैं। उसे जो भी नाम दें, वह उसे देता है।

आप इसे क्या कहते हैं? वैसे भी, वह उस आदमी को पुनर्जीवित करता है। मोनर्जिस्टिक, दिव्य मोनर्जिज्म, मानव मोनर्जिज्म। मानव मोनर्जिज्म, पेलागियनिज्म।

ईश्वरीय एकतावाद, ऑगस्टिनियनवाद, और उसका पोता, केल्विनवाद। तो हम इसे ऑगस्टिनियन-केल्विनियन स्थिति कह सकते हैं। इसे ऐसा कहा जाता है।

यह पेलाजियन स्थिति है। जैसा कि मैंने पहले कहा, अपने रोमन कैथोलिक या अर्मेनियाई दोस्तों को, यहाँ तक कि पेलाजियन भी कहना अच्छा नहीं है, बिल्कुल भी अच्छा नहीं है। फ़िनी ने खुद, मेरे लिए आश्चर्यजनक रूप से, अपने दृष्टिकोण को अर्ध-पेलाजियनवाद के साथ पहचाना।

वैसे, अगर आप इस चित्रण को लिखित रूप में देखना चाहते हैं, तो माइकल विलियम्स और मैंने मिलकर एक किताब लिखी है जिसका नाम है 'मैं आर्मीनियन क्यों नहीं हूँ। ओह, यह एक मज़ेदार किताब है, मुझे निष्पक्षता से कहना चाहिए। यह ' *मैं कैल्विनिस्ट क्यों नहीं हूँ के एक साथी खंड का हिस्सा है*, जिसे जैरी वाल्स और उनके एक सहयोगी जोसेफ डोंगेल ने एस्बरी सेमिनरी के समय लिखा था।

जैरी वाल्स और जोसेफ डोंगेल। वाल्स एक दार्शनिक थे, डोंगेल एक नए नियम के विद्वान थे। विलियम्स और मैं व्यवस्थित धर्मशास्त्री थे।

विलियम्स ऐतिहासिक विशेषज्ञता के साथ। मेरा जोर अधिक व्याख्यात्मक था। *मैं कैल्विनिस्ट क्यों नहीं हूँ*, उन्होंने पहले इंटरवर्सिटी को प्रस्ताव दिया।

इंटरवर्सिटी कॉलेज सेमिनरी में आई और हमसे पूछा कि क्या हम एक साथ एक पुस्तक लिखेंगे, जवाब मिला। और हमने कहा, ज़रूर। और हम यह लिखना चाहते थे कि मैं एक कैल्विनिस्ट क्यों हूँ।

और उन्होंने कहा, ऐसा नहीं हो सकता। यह 'मैं क्यों नहीं हूँ' होना चाहिए। इसलिए, हमारी किताब का नाम 'मैं आर्मीनियाई क्यों नहीं हूँ' रखा गया।

मेरे छात्रों ने कहा कि आपने वैसे भी 'मैं एक कैल्विनिस्ट क्यों हूँ' लिखा है। किसी भी मामले में, यह चित्रण उस पुस्तक से लिया गया है, और यह वास्तव में अंततः फ़िनी से ही आया है। सेमी-पेलाजियनिज़्म कहता है, वह आदमी मुसीबत में है, ठीक है।

और यह सच है, भगवान धरती पर हैं, और भगवान मदद करने में सक्षम हैं। लेकिन मनुष्य को पहल करनी चाहिए। अगर वह भगवान को पुकारकर यह नहीं कहता कि, हे, मुझे बचाओ, तो वह बच नहीं पाएगा।

भगवान की इच्छा है, लेकिन हमारा पहला कदम उठाना ज़रूरी है। यह अर्ध-पेलाजियन है, न कि एक मोनर्जिस्टिक, स्वतंत्र, मानवीय स्वतंत्र इच्छा, पूर्ण स्वतंत्र इच्छा। यह एक तालमेल है, भगवान और मनुष्य एक साथ काम करते हैं।

मुसीबत में फंसा हुआ आदमी पुकारता है और भगवान उसे बचा लेते हैं। इसी तरह, सेमी-ऑगस्टीनियनवाद भी एक तालमेल है। लेकिन इस बार, सेमी-पेलाजियनवाद के मानवीय तालमेल से अलग, यह सेमी-ऑगस्टीनियनवाद का दैवीय तालमेल है।

इस मामले में, भगवान पहले से ही समुद्र तट से पुकार रहे हैं। और उस पुकार का हमें जवाब देना चाहिए, अन्यथा भगवान हमें नहीं बचाएंगे। आप कहते हैं, क्या ऑगस्टीनियनवाद यह नहीं कहता कि हमें जवाब देना चाहिए? हाँ, बेशक यह कहता है।

लेकिन यह कहता है कि ईश्वर की पूर्वगामी, प्रभावकारी कृपा ईश्वर के प्रति हमारी प्रतिक्रिया और हमारी आस्था की प्रतिक्रिया को सक्षम बनाती है। यह पूरी बात विलियम्स ने मेरी पुस्तक, *व्हाई आई एम नॉट एन आर्मिनियन* में हमारे आर्मिनियन भाइयों और बहनों के प्रति निष्पक्ष होने के लिए आगे रखी थी। क्योंकि उनका सबसे अच्छा धर्मशास्त्र अर्ध-ऑगस्टीनियन है, पेलाजियन नहीं, और अर्ध-पेलाजियन भी नहीं।

हालाँकि मेरे कुछ आर्मिनियन मित्रों ने कहा है कि उनके कुछ साथी वास्तव में अर्ध-पेलाजियन हैं। लेकिन यह सबसे अच्छा आर्मिनियनवाद नहीं है, और उस पुस्तक में हमारा लक्ष्य सबसे खराब प्रतिद्वंद्वी को हराना नहीं था, अगर आप चाहें तो हम साथी ईसाइयों को प्रतिद्वंद्वी कह सकते हैं, बल्कि सबसे अच्छे प्रतिद्वंद्वी को हराना था। इसके अलावा, रोमन कैथोलिक धर्म ने पेलाजियनवाद और यहां तक कि अर्ध-पेलाजियनवाद की भी निंदा की, और ऑरेंज की परिषद में पहुंचे और उसके बाद एक ऐसी स्थिति में पहुंचे जिसे काफी हद तक अर्ध-ऑगस्टीनियन कहा जाता है।

पूर्ण विकसित ऑगस्टीनियनवाद नहीं, जिसे लूथर और कैल्विन ने सुधार के समय पुनः प्राप्त किया, हालाँकि लूथर के वंशज हमेशा इसे उतनी सटीकता से नहीं अपनाते थे जितनी सावधानी से कैल्विनवादियों ने किया था। मूल पाप के विचार, कैल्विनवाद। यह दृष्टिकोण मानता है कि ईश्वर मानवजाति को भ्रष्ट स्वभाव और अपराध दोनों ही आरोपित करता है।

याद रखें, आर्मिनियनवाद ने कहा, ठीक है, पेलाजियनवाद ने कहा, भगवान दोनों में से किसी को भी आरोपित नहीं करता है। हम सभी अपने स्वयं के आदम हैं, अगर आप चाहें; हम मूल पाप के बिना पैदा हुए हैं। आर्मिनियनवाद कहता है नहीं, नहीं, नहीं, हम पापी पैदा होते हैं।

यह भ्रष्ट तो है लेकिन दोषी नहीं है। इसके विपरीत, कैल्विनवाद कहता है कि अपराध और भ्रष्टाचार दोनों ही जन्म से पहले हमारे आध्यात्मिक बैंक खातों में जमा हो जाते हैं। इस प्रकार कैल्विनवाद पेलाजियनवाद से अलग है, जो भ्रष्टाचार और अपराध के आरोपण से इनकार करता है।

यह आर्मिनियनवाद से अलग है, जो भ्रष्ट प्रकृति के आरोपण को मानता है लेकिन मनुष्य पर दोष और दोषारोपण के आरोपण को अस्वीकार करता है। कैल्विनिस्ट इस बिंदु तक सहमत हैं। वे आदम के पाप और हमारे पाप के बीच संबंध के सवाल पर दो उप-स्थितियों में विभाजित हो जाते हैं।

ये पद प्रतिनिधि दृष्टिकोण और प्राकृतिक मुखियापन दृष्टिकोण हैं। प्रतिनिधि दृष्टिकोण। आदम मानव जाति का प्रतिनिधि था।

परमेश्वर ने आदम को जाति की ओर से कार्य करने की योजना बनाई। हम सभी पहले मनुष्य, हमारे संघीय मुखिया के व्यक्तित्व में परिवीक्षा पर थे। प्रतिनिधि दृष्टिकोण को संघीय मुखियापन भी कहा जाता है।

प्राकृतिक प्रधानता दृष्टिकोण को यथार्थवाद भी कहा जाता है। संघीय प्रधानता, प्राकृतिक प्रधानता। प्रतिनिधि दृष्टिकोण, यथार्थवाद।

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, ये शब्द स्पष्ट होते जाएंगे। हम सभी पहले व्यक्ति, आदम, हमारे संघीय प्रमुख के व्यक्तित्व में परिवीक्षा पर थे, और इसीलिए इस दृष्टिकोण को संघीय प्रमुखता कहा जाता है। जब आदम ने पाप किया, तो उसके अपराध और भ्रष्टाचार को उसके सभी वंशजों पर आरोपित किया गया।

बेशक, मसीह ने स्वीकार किया। एरिकसन, ईसाई धर्मशास्त्र में मिलर एरिकसन, सिखाते हैं कि संघीय प्रमुखता आम तौर पर आत्मा की उत्पत्ति के सृजनवादी दृष्टिकोण से संबंधित है, लेकिन उनके प्रति बहुत सम्मान के साथ, निश्चित रूप से उनके लेखन द्वारा मेरे शिक्षक, मैं आत्मा की उत्पत्ति के बारे में उनके द्वारा एक विशेष दृष्टिकोण और मूल पाप पर दो कैल्विनवादी पदों में से एक के विशेष दृष्टिकोण को अपनाने के बीच कोई आवश्यक संबंध नहीं देखता। लुईस बर्कोफ, जॉन मरे और एस. लुईस जॉनसन इस दृष्टिकोण के समर्थक हैं।

उनका दावा है कि प्रतिनिधि दृष्टिकोण, संघीय प्रधानता, रोमियों 5 में एडम-क्राइस्ट समानांतर के साथ सबसे अच्छा मेल खाता है। यह दृष्टिकोण तत्काल और तत्काल आरोपण में विभाजित है। मुझे नहीं पता कि मैंने उल्लेख किया है कि हम धर्मशास्त्रियों को इस तरह की चीजें क्यों पसंद हैं। इसका उत्तर यह है कि यह बहुत जटिल है, आपको हमारी आवश्यकता है, और यह हमें रोजगार देता है।

किसी भी मामले में, मूर्खता को एक तरफ रखते हुए, मैं प्रतिनिधि दृष्टिकोण से सहमत हूँ। प्राकृतिक मुखियापन दृष्टिकोण। इस दृष्टिकोण को कभी-कभी यथार्थवाद भी कहा जाता है, और आप थोड़ी देर में देखेंगे कि क्यों, या यथार्थवादी मुखियापन।

मैंने सुना है, एरिकसन, जो इस दृष्टिकोण की वकालत करते हैं, उद्धरण, यह दृष्टिकोण आत्मा की उत्पत्ति के परंपरावादी दृष्टिकोण से संबंधित है, जिसके अनुसार हम अपनी आत्मा को अपने माता-पिता से संचरण द्वारा प्राप्त करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे हम अपनी शारीरिक प्रकृति को प्राप्त करते हैं। इसलिए हम अपने पूर्वजों में बीज के रूप में मौजूद थे, बहुत ही वास्तविक अर्थों में, इसलिए यथार्थवाद, बहुत ही वास्तविक अर्थों में, हम आदम के साथ थे। हम उसके बीज में थे।

उनका कार्य केवल एक अलग व्यक्ति का नहीं था, बल्कि पूरी मानव जाति का था। पूरी मानव जाति आदम के भीतर बीज रूप में मौजूद थी। हालाँकि हम व्यक्तिगत रूप से वहाँ नहीं थे, फिर भी हम वहाँ थे।

पूरी मानवजाति ने पाप किया है। इसलिए, मैं अभी भी एरिक्सन को उद्धृत कर रहा हूँ। इसलिए, आदम से भ्रष्ट स्वभाव और अपराध प्राप्त करने में कुछ भी अनुचित या अनुचित नहीं है। उन शब्दों को याद रखें, क्योंकि हम अपने पाप के उचित परिणाम प्राप्त कर रहे हैं क्योंकि हम वास्तव में आदम की कमर में थे।

यह ऑगस्टीन का दृष्टिकोण है, वह कहते हैं, एरिक्सन कहते हैं। एरिक्सन, क्रिश्चियन थियोलॉजी, दूसरा संस्करण, 635, 636। यदि आपके पास बाद का संस्करण है, तो मैं उनका ट्रैक भी नहीं रख सकता। सही जगह खोजने के लिए इंडेक्स का उपयोग करें।

तो, मूल पाप के बारे में कैल्विनवादी दृष्टिकोण दो भागों में विभाजित है, और पहला दो और भागों में विभाजित है। संघीय प्रधानता और यथार्थवादी प्रधानता है। एक प्रतिनिधित्ववाद है, एक यथार्थवाद है।

वे दोनों मानते हैं कि आदम, वे दोनों आरोप लगाते हैं और आदम हमारा मुखिया है, लेकिन क्या वह हमारा संघीय मुखिया, हमारा प्रतिनिधि है? क्या वह हमारा स्वाभाविक मुखिया है? वैसे, मामला इस तथ्य से जटिल है कि वह हमारा स्वाभाविक मुखिया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि हम आदम से आए हैं। सवाल यह है कि क्या मूल पाप को समझाने का यही सबसे अच्छा तरीका है? ध्यान दें कि एरिक्सन ने कहा, यह अनुचित या अनुचित नहीं है।

प्रतिनिधित्ववाद, संघीय नेतृत्व के खिलाफ सबसे बड़ी आलोचना यह है कि आदम ने मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर किया; यह अनुचित है। हम एक व्यक्ति के पाप के लिए कैसे दोषी ठहराए जा सकते हैं? मूल पाप के विचारों का मूल्यांकन। वही विचार, हालाँकि जब हम कैल्विनवाद पर पहुँचते हैं, तो हम दूसरे उपसमूह के साथ काम करेंगे।

पेलागियनवाद, ताकत। मैं यहाँ तक पहुँच रहा हूँ। यह सच है कि आदम बाकी मानव जाति के लिए एक बुरा उदाहरण था।

यह भी सच है कि पेलागियनवाद एकेश्वरवादी है। इसमें ईश्वर या कृपा की भी कोई आवश्यकता नहीं है। कमज़ोरियाँ।

रोमियों 5:12 से 19 में पॉल पाँच बार कहता है कि आदम का एक पाप सभी की मृत्यु का कारण था। क्या आप वाकई मुझसे यह मानने की उम्मीद करते हैं कि यह केवल उसके बुरे उदाहरण के कारण हुआ? मैं इस पर विश्वास नहीं करता। श्लोक 15, एक आदमी के अपराध या अपराध के कारण बहुत से लोग मर गए।

पद 16, एक पाप के कारण न्याय हुआ और दण्डाज्ञा आई। पद 17, एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने राज्य किया। पद 18, एक अपराध का परिणाम सब मनुष्यों के लिए दण्डाज्ञा थी।

और 19, एक आदमी की अवज्ञा के कारण, बहुत से लोग पापी बन गए। आदम एक बुरा उदाहरण था, हाँ। हव्वा भी ऐसी ही थी।

लेकिन यह मूल पाप का कोई दृष्टिकोण नहीं है। एस. लुईस जॉनसन, उस लेख में जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था, रोमियों 5:12 से 19, व्याख्या और धर्मशास्त्र में एक परीक्षण मामला, कुछ ऐसा ही, मेरिल टेनी और लॉंगनेकर और टेनी द्वारा संपादित न्यू स्टडीज इन न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी नामक पुस्तक में। एस. लुईस जॉनसन प्रभावी ढंग से तर्क देते हैं कि श्लोक 14 का अर्थ इस दृष्टिकोण के विरुद्ध है।

वहाँ, यह कहा गया है कि कुछ लोग, जो पाप करने वाले सभी लोगों में से एक हैं और जिन्हें पाप के लिए दंड के रूप में मृत्यु का सामना करना पड़ा, उन्होंने आदम के समान पाप नहीं किया। यह व्यक्तिगत और सचेत अपराध है। तो वे आदम के पाप के कारण ही मरे होंगे।

और पेलागियनवाद में ऐसा होना असंभव है क्योंकि पाप करने का कोई दूसरा तरीका, कोई दूसरा तरीका नहीं है, क्योंकि हम उसके उदाहरण का अनुसरण करते हैं। और पॉल कहते हैं कि आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने राज किया, यहाँ तक कि उन लोगों पर भी जिनका पाप आदम के अपराध जैसा नहीं था। वैसे, यह यथार्थवाद की मृत्यु का भी संकेत देता है, क्योंकि अगर हम वास्तव में उसकी कमर में हैं, तो वह हमसे अलग तरीके से पाप कैसे कर सकता है? लेकिन यह पेलागियनवाद को खत्म कर देता है, क्योंकि यह कहता है कि कुछ लोगों ने उसी तरह पाप नहीं किया जैसा उसने किया था।

खैर, अगर पेलागियस सही है तो हम उसके बुरे उदाहरण का अनुसरण कर रहे हैं। जॉनसन सही है। 13 और 14 का विस्तृत अर्थ जो भी हो, उन्होंने उसी तरह पाप नहीं किया जैसा उसने किया था। इसलिए, वे उसके पाप के कारण ही मरे होंगे।

और पाँच बार, हमने देखा कि पॉल ने उस अंश में यही कहा है। मैं निष्कर्ष निकालता हूँ कि हालाँकि आदम एक बुरा उदाहरण था, लेकिन पेलागियनवाद मूल पाप की व्याख्या करने के सिद्धांत के रूप में विफल रहता है। आर्मिनियनवाद, ताकत।

आर्मिनियनवाद सही है जब यह मानता है कि, उद्धरण, आदम के पतन के बाद से, पाप का भ्रष्टाचार उस जनेलुस्का पुष्टि से हर व्यक्ति में व्याप्त हो गया है। आर्मिनियन दृष्टिकोण भी सही है जब यह मानता है कि उस भ्रष्टाचार का परिणाम यह है कि पापी उद्धार के लिए भगवान के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया करने में असमर्थ हैं।

दुर्भाग्य से, जैसा कि सर्वश्रेष्ठ आर्मिनियन ने बताया, यह एक काल्पनिक स्थिति है। यह एक काल्पनिक स्थिति है क्योंकि कोई भी मनुष्य वास्तव में अक्षम नहीं है। ओह, वे तकनीकी रूप से अक्षम पैदा होते हैं, काल्पनिक रूप से, लेकिन उन्हें तुरंत सार्वभौमिक पूर्वगामी अनुग्रह प्राप्त होता है।

इसे देखते हुए, उन्हें तुरंत सार्वभौमिक, पूर्वगामी अनुग्रह प्राप्त होता है जो उन्हें विश्वास करने में सक्षम बनाता है। इसलिए, वास्तव में, कोई भी मनुष्य अक्षम नहीं है। कमज़ोरियाँ।

आर्मिनियनवाद जो दावा करता है, वह सही है। हालाँकि, यह पर्याप्त दावा नहीं करता है। जेनेलुस्का की पुष्टि और उस पर मिकी की टिप्पणी को फिर से पढ़ने पर, मैंने देखा कि आदम के पाप ने उसके वंशजों को किस तरह प्रभावित किया, इसका कोई स्पष्टीकरण नहीं है।

केवल, इस प्रभाव के तथ्य की पुष्टि की गई थी। मिकी कहते हैं, उद्धरण, एडम और ईव मानवता के प्रोटोटाइप थे, और उनकी कार्रवाई तब से प्रत्येक व्यक्ति के लिए निर्णायक रही है। उस जॉर्डरवन पुस्तक का पृष्ठ 82।

मेरा सवाल यह है कि पहले पुरुष और महिला का पाप मानव जाति के लिए कैसे निर्णायक था? इस कथन में पेलागियनवाद, कैल्विनिस्ट के किसी भी दृष्टिकोण या अन्य विचारों को पढ़ा जा सकता है। आर्मिनियन यह दावा करके जवाब दे सकते हैं कि वे शास्त्र की सीमाओं के भीतर ही रहें और दूसरों पर, उदाहरण के लिए, कैल्विनिस्टों पर, उनके धर्मशास्त्र में शब्द से परे जाने का आरोप लगाएँ। फिर भी हमने देखा है कि रोमियों 5 में बाइबिल के डेटा मूल पाप के पेलागियन दृष्टिकोण को कैसे खारिज करते हैं।

इसलिए, पॉल मिकी और अन्य ईश्वरीय इंजीलवादी आर्मिनियन द्वारा वकालत की गई आर्मिनियन स्थिति में दी गई परिभाषा से अधिक मूल पाप की परिभाषा आवश्यक है। मैं पूर्ववर्ती अनुग्रह की आर्मिनियन अवधारणा से भी अपवाद लेता हूँ, जो मानव जाति पर आदम के पाप के प्रभावों को समाप्त कर देता है। मेरा अपवाद किस पर आधारित है? इसके लिए शास्त्रों के आधार की कमी।

मेरा अपना दृष्टिकोण यह है कि हमें अपने विश्वास के हर एक लेख, हर उस चीज़ की जांच करनी चाहिए जिस पर हम विश्वास करते हैं, पवित्र शास्त्र के आधार पर। और न केवल उन सिद्धांतों से कुछ सिद्धांतों को निकालना चाहिए जिन्हें हमने शास्त्र से सिद्ध किया है। बेशक, हमारा धर्मशास्त्र सुसंगत होना चाहिए, लेकिन यह व्याख्यात्मक रूप से भी आधारित होना चाहिए। इसे कहने का वैज्ञानिक तरीका क्या है? धर्मशास्त्र और धर्मशास्त्रीय प्रणाली के ठोस होने के लिए यह तार्किक सुसंगतता के साथ-साथ व्याख्यात्मक डेटा होना चाहिए।

इस प्रकार, दिन के अंत में, मेरी प्रणाली पूरी नहीं है। और कुछ चीज़ें दूसरों की तुलना में शास्त्र में अधिक स्पष्ट रूप से सिखाई गई हैं। और मैं एक विशाल अधिचरणा का निर्माण करने में संकोच करता हूँ, यहां तक कि दर्शन या मानवीय तर्क या जो कुछ भी हो, उस पर आधारित बाइबिल की नींव के साथ भी, जहां बाइबिल यह नहीं कहती है, हाँ, बाइबिल अनुग्रह की शिक्षा देती है।

हाँ, यह अनुग्रह की शिक्षा देता है। हाँ, यह सिखाता है कि अनुग्रह बचाता है। हाँ, यह सिखाता है कि अनुग्रह उद्धार से पहले आता है।

यह पूर्वगामी है। लेकिन यह नहीं सिखाता कि यह मनुष्यों को विश्वास करने में सक्षम बनाता है। यह वेस्लेयन धर्मशास्त्र की एक धारणा है।

बल्कि, शास्त्र में पूर्ववर्ती अनुग्रह प्रभावकारी है और इसलिए, विशेष है। कैल्विनवाद, प्राकृतिक मुखियापन, ताकत, प्राकृतिक मुखियापन, या यथार्थवाद सही ढंग से मानता है कि सभी की मृत्यु

आदम के पाप में निहित है। यह भी सही ढंग से सिखाता है कि आदम मानव जाति का प्राकृतिक मुखिया है।

मैं आदम के स्वाभाविक मुखियापन पर सवाल नहीं उठा रहा हूँ। मैं यह सवाल कर रहा हूँ कि क्या मूल पाप को समझने का यही तरीका है। कमज़ोरियाँ, हालाँकि यथार्थवाद प्रतिनिधि दृष्टिकोण की तुलना में विदेशी अपराध की समस्या को बेहतर ढंग से संभालने का दावा करता है।

प्रतिनिधि दृष्टिकोण या संघीय प्रमुखता के साथ यही बड़ी समस्या है - विदेशी अपराधबोध। एक मिनट रुकिए।

आप मुझे बता रहे हैं कि ईडन गार्डन में आदम के अपराध, पाप का मतलब मानव जाति की निंदा है? हाँ। यह अविश्वसनीय है। यह अनुचित है।

यह विदेशी अपराध है। और वास्तव में, यह ऐसा ही है। मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है, हाँ, मेरा मतलब अपने निष्कर्षों पर पहले से ही निर्णय लेना है।

लेकिन रोमियों 5 के अंश में, मुझे ऐसा लगता है कि आपके पास विदेशी अपराधबोध है क्योंकि आपके पास कुछ और है। और इसे विदेशी धार्मिकता कहा जाता है। और जैसा कि मसीह की धार्मिकता मसीह की है, हमारी धार्मिकता नहीं, यह हमारे बाहर की एक विदेशी धार्मिकता है, जैसा कि लूथर ने कहा, हमारे द्वारा निर्मित नहीं, यहाँ तक कि इसे हमारे आध्यात्मिक बैंक खाते में गिना जाता है और हमें परमेश्वर के लिए स्वीकार्य बनाता है।

इसलिए यह इस तरह से समानांतर है कि जिस तरह से यह मार्ग काम करता है वह यह है कि विदेशी अपराध को आरोपित किया गया, गिना गया, और हमारे आध्यात्मिक बैंक खाते में गिना गया। इसी तरह, उसी तरह, हालाँकि यथार्थवाद प्रतिनिधि दृष्टिकोण की तुलना में विदेशी अपराध की समस्या को बेहतर ढंग से संभालने का दावा करता है, लेकिन यह अपने दावे पर खरा नहीं उतरता है। जॉनसन यह कहते हैं।

खैर, मैं उस पुस्तक, न्यू स्टडीज इन बाइबिलिकल थियोलॉजी में एस. लुईस जॉनसन के सुंदर निबंध पर निर्भर रहता हूँ। यह सही शीर्षक नहीं है। मैं इसे सही कर लूँगा।

जॉनसन कहते हैं, उद्धरण, भले ही हमें यह मान लेना चाहिए कि आदम में सामान्य मानवता ने पाप किया। उसकी कमर में, उसके बीज में मानवता, अगर आप चाहें तो। तो, वह हमारा स्वाभाविक मुखिया है।

और फिर, मैं यही कहूँगा। वह हमारा स्वाभाविक मुखिया है। लेकिन यथार्थवाद, जहाँ तक मूल पाप की व्याख्या का सवाल है, इससे कहीं ज़्यादा कह रहा है।

यह कह रहा है कि उसका स्वाभाविक मुखियापन मानवजाति पर उसके पाप के आरोपण को समझने की कुंजी है; भले ही हम यह मान लें कि आदम में सामान्य मानवता ने पाप किया, फिर भी हमें एक विदेशी अपराध की समस्या से कोई राहत नहीं मिलेगी। यदि दंड को सही ठहराया

जाना है, तो पाप का कार्य सचेत आत्मनिर्णय और व्यक्तिगत अपराध होना चाहिए, यदि आप चाहें तो। फिर भी, यथार्थवाद के अनुसार, जब आदम ने पाप किया, तो एक व्यक्ति और व्यक्ति के रूप में उसकी संतान का अस्तित्व ही नहीं था।

उनके पाप का कृत्य उनके व्यक्तित्व से पहले का है। मैं नहीं समझ पा रहा हूँ कि इससे न्याय की समस्या का एक कण भी कम कैसे हो जाता है। हम अपने होने से पहले कैसे कार्य कर सकते हैं? क्या यह वास्तव में हमारे लिए उचित है कि हम आदम की कमर में बीज बनें? और यह हमारे अपराध, हमारे पाप, हमारे भ्रष्टाचार को स्थापित करता है।

जॉनसन असहनीय निहितार्थों की ओर इशारा करते हैं, जो यथार्थवाद से उत्पन्न होते हैं और सिद्धांत पर बोझ डालते हैं। उनके निबंध का पृष्ठ 310। आदम के वंशज केवल उसके पहले पाप के लिए ही क्यों जिम्मेदार हैं, उसके बाद के पापों के लिए नहीं? आदम के पाप को मानव जाति के विरुद्ध क्यों गिना जाता है, हव्वा के पाप को नहीं? मैं आपको बताता हूँ कि क्यों।

वह हमारा प्रतिनिधि था, और उसका पहला पाप ही हमारे लिए गिना जाता है। हव्वा हमारा प्रतिनिधि नहीं थी, और उसके अन्य पाप भी हमारे लिए नहीं गिने जाते। बस एक ही पाप की ज़रूरत थी।

मूल पाप, जिसे उचित ही कहा जाता है। यथार्थवाद उस बात के लिए तर्क देता है जो रोमियों 5, मूल पाप के लिए टेक्स्टस क्लासिकस, कभी नहीं कहता। कि पाप और अपराध सभी मनुष्यों के कार्य का परिणाम हैं।

बार-बार, यह अंश एक व्यक्ति के पाप को हमारे पाप और अपराध से जोड़ता है। यह कभी भी मानव जाति के पाप और अपराध को सभी मनुष्यों के कार्यों से नहीं जोड़ता है। "यथार्थवाद यह कह सकता है, जॉनसन ने लिखा, लेकिन पॉल ने कभी ऐसा नहीं कहा, और चुप्पी लगभग बहरा कर देने वाली है" पृष्ठ 310।

हाँ, वह थोड़ा नाटकीय है, लेकिन यह ठीक है। एक यथार्थवादी इस बात पर आपत्ति करेगा कि प्रतिनिधि दृष्टिकोण रखने वाले लोग चुप्पी से तर्क का उपयोग कर रहे हैं।

संघीय प्रमुखता के अधिवक्ता यह कहकर जवाब देते हैं कि यथार्थवादी सिद्धांत निर्माण में मुख्य किरण मार्ग से गायब है। निश्चित रूप से, ऐसी चूक महत्वपूर्ण है। कोई व्यक्ति अपने विचार को उस चीज़ पर कैसे आधारित कर सकता है जो मार्ग में नहीं कहा गया है? प्रतिनिधित्व यथार्थवाद पर अपने निष्कर्ष को मानने, सवाल को टालने का आरोप लगाता है।

यानी, यह अनुच्छेद यह नहीं कहता कि मानव जाति का पाप और अपराध सभी मनुष्यों का कार्य है। यह कहता रहता है कि यह एक मनुष्य, आदम का कार्य है। इसके अलावा, रोमियों 5.14 में अंतिम खंड यथार्थवाद का खंडन करता प्रतीत होता है।

यह खंड दावा करता है कि मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज किया, जिन्होंने आदम के अपराध की तरह पाप नहीं किया, उद्धरण बंद करें। यथार्थवाद का मानना है कि सभी लोगों ने, उद्धरण, बिना

किसी अपवाद के, आदम की तरह पाप किया क्योंकि उन्होंने उसके प्रति नस्लीय रूप से पाप किया। सभी ने एक निश्चित और सकारात्मक आदेश का उल्लंघन किया है।

वही जिसे आदम ने तोड़ा था। इस प्रकार, यथार्थवाद में अलग-अलग तौर-तरीकों, पाप करने के अलग-अलग तरीकों के लिए कोई जगह नहीं है। अगर हम उसके गर्भ में थे जब उसने निषेध की बात कही थी, तो हम भी थे, है न? रोमियों, वह धारा, यहाँ तक कि उन लोगों पर भी मृत्यु का शासन था जिन्होंने उसके जैसा पाप नहीं किया था, यह कैसे सच हो सकता है? अगर वह वास्तव में मूल पाप के मामले में हमारा मुखिया था।

जॉनसन ने सही तर्क दिया है, मुझे लगता है, कि यथार्थवाद को रोमियों 5 में आदम-मसीह के समानांतर से परेशानी है, उद्धरण, जैसे लोग एक धार्मिकता के लिए उचित ठहराए जाते हैं जो व्यक्तिगत रूप से उनका अपना नहीं है, वैसे ही उन्हें एक पाप के लिए दोषी ठहराया गया जो व्यक्तिगत रूप से उनका अपना नहीं था। बेशक, यह पहचानना होगा कि यह सादृश्य एक आदर्श सादृश्य नहीं है, लेकिन पॉल के बिंदु के लिए यह आवश्यक प्रतीत होता है कि दो सिद्धांतों और उनके लोगों के बीच एकता की प्रकृति समानांतर है। आदम और उसके लोगों के बीच एकता की प्रकृति, मसीह और उसके लोगों के बीच एकता की प्रकृति, क्या यह वही नहीं है जो 5:14 हमें बताता है जब यह कहता है कि आदम मसीह का एक प्रकार था? और जो 18 और 19 स्पष्ट रूप से कहते हैं, यहां तक कि दोहराते हुए, 19 18 को दोहराते हुए, और जो चार्ट से पता चलता है, क्या यह बिल्कुल वही कहता है? बेशक, सभी विवरण एक जैसे नहीं हैं, और यही बात रोमियों 5 के अध्याय 15, 16 और 17 में भी दिखाई गई है, लेकिन दो आदम और उनके लोगों के बीच एकता की प्रकृति बिल्कुल एक जैसी है।

यह एक प्रतिनिधि संघ है। मध्यस्थता आरोपण - एक संक्षिप्त सारांश।

मध्यस्थता और तत्काल आरोपण के कैल्विनवादी विचार आदम और उसकी संतानों के बीच प्रतिनिधि संघ और आदम के पाप को नस्ल पर आरोपित करने में समान हैं। जोशुआ प्लेकेयस, प्लेकेयस, जोशुआ प्लेकेयस, फ्रांस में सैलमोर में धर्मशास्त्रीय स्कूल के एक प्रोफेसर, मध्यस्थता आरोपण के दृष्टिकोण के प्रवर्तक हैं। मैं कह सकता हूँ कि यह स्कूल कैल्विनवाद से कई विचलन के लिए प्रसिद्ध था जो रूढ़िवादी कैल्विनवादियों को पसंद नहीं था, जिसमें असीमित प्रायश्चित भी शामिल है।

इससे पहले, सभी रूढ़िवादी सुधारवादी विद्वानों ने सिखाया था कि आदम का पाप मानव जाति की निंदा का आधार था और मानव स्वभाव का भ्रष्टाचार आदम के पाप का परिणाम था। मानव जाति पर अपराध का आरोप लगाया जाता है। हम दोषी हैं, और उस अपराध के कारण, जब हम पैदा होते हैं, हम पाप करते हैं, और हमें दोषी ठहराया जाता है।

भ्रष्टाचार तार्किक रूप से अपराध के बाद आता है। आदम का पाप भ्रष्टाचार का आधार था, और वह भ्रष्टाचार आदम के पाप का परिणाम था। प्लेकेयस ने क्रम को उलट दिया।

उसने भ्रष्ट मानव स्वभाव को दण्ड का आधार बनाया और आदम के पाप के अपराध को भ्रष्ट स्वभाव में भागीदारी पर निर्भर बनाया। वह क्या करने की कोशिश कर रहा है? विदेशी अपराध से दूर हो जाओ। यह इन सभी अन्य विचारों की प्रेरणा है।

इस प्रकार, दोनों के बीच अंतर को स्पष्ट करना सहायक हो सकता है। तत्काल आरोपण के अनुसार, इस समय तक मानक दृष्टिकोण, नंबर एक, आदम के पाप को मानव जाति पर आरोपित किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप जाति के लिए निंदा होती है। परिणामस्वरूप, मनुष्य एक भ्रष्ट स्वभाव के साथ पैदा होते हैं।

तत्काल आरोपण और इस पर प्लेकेयस के विचार के अनुसार, कैल्विनवाद को अधिक स्वादिष्ट बनाने की कोशिश करते हुए, आदम के पाप के परिणामस्वरूप, मनुष्य एक भ्रष्ट स्वभाव के साथ पैदा होते हैं। यह भ्रष्ट स्वभाव प्रत्येक व्यक्ति की निंदा का आधार है। चूंकि प्रत्येक व्यक्ति में आदम से एक भ्रष्ट स्वभाव है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति आदम के पाप का दोषी है।

कमज़ोरियाँ। रोमियों 5:12 में, तत्काल दोषारोपण का अर्थ है कि सभी पापी भ्रष्ट हो गए हैं। यह असंभव प्रतीत होता है।

बी. रोमियों 5 में, पॉल बार-बार सिखाता है कि आदम और उसके वंशज आदम के एक पाप के लिए मरते हैं। "मृत्यु, निंदा, और पापी की स्थिति सभी एक आदमी के एक पाप से संबंधित हैं। किसी भी तरह का कोई मध्यस्थ नहीं है।" जॉनसन, पृष्ठ 311। मैंने आपको बताया कि मैं जॉनसन पर भरोसा कर रहा हूँ। यह अद्भुत है।

व्याख्या और धर्मशास्त्र में उनका अभ्यास सुंदर है। वैसे, उन्होंने यह कहकर इसका परिचय दिया कि धर्मशास्त्र व्याख्या से तेजी से अलग होता जा रहा है, और यह बहुत बुरी बात है। वह कुछ उदार व्यवस्थित धर्मशास्त्रों को प्रेरित करते हैं।

उदाहरण के लिए, टिलिच कहते हैं कि यह पारंपरिक धर्मशास्त्र में बाइबिल के उपयोग की तुलना में उतना ही अजीब है जितना कि बाद में पिकासो की कला, क्यूबिज्म, और इसी तरह की अन्य कलाएँ, उस परंपरा की नियमित प्रतिनिधित्वात्मक कला की तुलना में है जिसमें वे पैदा हुए थे, और जिसे करने में वे बहुत अच्छे थे। यह विचित्र है। टिलिच ने शायद ही बाइबिल का हवाला दिया हो, और जब वे ऐसा करते हैं, तो ओह बॉय, यह एक दार्शनिक ग्रंथ है, उनका व्यवस्थित धर्मशास्त्र।

और इसलिए, एस. लुइस जॉनसन कहते हैं, एस. लुइस जॉनसन ने हमेशा के लिए डलास थियोलॉजिकल सेमिनरी में न्यू टेस्टामेंट पढ़ाया। फिर वे सेवानिवृत्त हो गए, और ट्रिनिटी डिविनिटी स्कूल चले गए और धर्मशास्त्र, व्याख्यात्मक धर्मशास्त्र पढ़ाया, जिसमें वे बहुत अच्छे थे। व्याख्या और धर्मशास्त्र में उनका अभ्यास मूल पाप के बारे में कई व्यवस्थित धर्मशास्त्रों के विचारों के प्रति एक मारक के रूप में देखा जाता है, जिसमें रोमियों 5 का उल्लेख हो सकता है, लेकिन मुझे लगता है कि उन्होंने उनमें से किसी को भी इसकी व्याख्या करते नहीं पाया।

एक धार्मिक व्याख्या। वारफील्ड का दिन बहुत पहले ही बीत चुका है। किसी विश्वविद्यालय में व्यवस्थित धर्मशास्त्र का प्रोफेसर बनने के लिए, या तो दर्शनशास्त्र में महारत हासिल करनी होती है, जैसा कि ट्रिनिटी के जॉन फीनबर्ग ने किया था, या आमतौर पर, बाकी सब, हममें से ज़्यादातर लोग करते हैं। ऐसा कहना सही नहीं है, और कुछ लोग दर्शनशास्त्र करते हैं।

हम ऐतिहासिक धर्मशास्त्र करते हैं। आप व्याख्यात्मक धर्मशास्त्र नहीं करते हैं, और परिणामस्वरूप, व्यवस्थित धर्मशास्त्री कभी-कभी दार्शनिक, व्यवस्थित धर्मशास्त्री होते हैं, या, मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह बेकार है, या ऐतिहासिक व्यवस्थित धर्मशास्त्री, और वहाँ भी अच्छी चीज़ें हैं, लेकिन हमें व्याख्यात्मक व्यवस्थित धर्मशास्त्रियों की आवश्यकता है। अब, डीए कार्सन शायद सही हैं।

तीस साल पहले, उन्होंने एक निबंध लिखा था, जिसमें उन्होंने अन्य बातों के अलावा, बाइबल की एकता और व्यवस्थित धर्मशास्त्र की संभावना के बारे में एक पुस्तक लिखी थी, जिसका नाम था स्क्रिप्चर एंड ट्रुथ, उन इब्री खंडों में से एक, काउंसिल ऑन बाइबिलिकल इनरेंसी, इब्री नहीं, काउंसिल ऑन बाइबिलिकल इनरेंसी, मैंने अपने संगठनों को भ्रमित कर दिया, माफ़ करें। इंटरनेशनल काउंसिल ऑन बाइबिलिकल इनरेंसी। उन्होंने तर्क दिया कि शास्त्रों की एकता पारंपरिक व्यवस्थित विज्ञान के लिए एक पूर्वधारणा है, और बाइबिल की आलोचना के जबरदस्त हमले, विशेष रूप से पुराने नियम और अब नए नियम पर, ने व्यवस्थित धर्मशास्त्र को विश्वविद्यालयों में असंभव बना दिया है।

इसमें बहुत सच्चाई है, और एस. लुइस जॉनसन का निबंध बहुत मददगार है। जाहिर है, मुझे लगता है कि यही मामला है। रोमियों 5:13, और 14 के साथ मधिका आरोपण में कठिनाई है।

आदम का पाप है, जो मृत्यु का कारण है, यहाँ तक कि उन लोगों के लिए भी जिन्होंने आदम की तरह पाप नहीं किया। यह पहले मनुष्य का पाप है जो आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु के शासन का कारण है। जॉनसन ने सही ढंग से तर्क दिया है, उद्धृत करें, मध्यस्थ आरोपण का सिद्धांत; वैसे, मध्यस्थ क्या है, और तत्काल क्या है? इसका उत्तर है आदम के अपराध का आरोपण।

तत्काल आरोपण में, आदम का अपराध तुरंत आरोपित किया जाता है, और भ्रष्टाचार को मध्यवर्ती रूप से आरोपित किया जाता है। यह उससे आता है। मध्यवर्ती आरोपण में, आदम का भ्रष्टाचार तुरंत आरोपित किया जाता है, और अपराध को मध्यवर्ती रूप से आरोपित किया जाता है।

इसलिए, उन्हें सीधे, तत्काल और मध्यस्थ आरोपण रखने के लिए, वह पहलू जो या तो तत्काल या मध्यस्थ रूप से आरोपित किया जाता है, आह, एडम का अपराध है। जॉनसन सही ढंग से तर्क देते हैं कि समानांतर के साथ मध्यस्थ आरोपण का सिद्धांत एडम और मसीह के बीच समानता के साथ असंगत है, जैसे कि हम अंतर्निहित धार्मिकता से नहीं बल्कि विदेशी धार्मिकता से न्यायोचित हैं। इसलिए, हम अंतर्निहित भ्रष्टाचार से नहीं बल्कि विदेशी भ्रष्टाचार, विदेशी अपराध से दोषी हैं।

मध्यस्थ आरोपण की कमजोरी के विरुद्ध पाँचवाँ तर्क। मध्यस्थ आरोपण को कैल्विनवाद को नरम करने के प्रयास के रूप में तैयार किया गया था, इस मामले में, उन लोगों के लिए भगवान द्वारा अपराध की गणना की समस्या को हल करके जिन्होंने व्यक्तिगत रूप से पाप नहीं किया था। यह विदेशी अपराध की समस्या है।

यथार्थवाद के मामले की तरह, यह सिद्धांत भी लक्ष्य तक पहुँचने में विफल रहता है। जॉनसन ने सटीक रूप से तर्क दिया है, उद्धरण, यदि अंतर्निहित भ्रष्टता एक दंड है, और अन्यथा तर्क करना शायद ही संभव हो, तो भगवान भ्रष्टाचार, भ्रष्टता और प्रदूषण को क्यों आरोपित करता है? आदम के पाप के कारण। यह आदम के पाप के लिए एक दंड है।

तो फिर अपराधबोध पहले भी रहा होगा। समझे? अगर अंतर्निहित भ्रष्टता एक सज़ा है, और यह है, तो अपराधबोध पहले भी रहा होगा। तो फिर, आदम के पहले पाप के अपराधबोध के अलावा और क्या अपराधबोध हो सकता है? असल में, मध्यस्थ आरोपण दमन करता है; मैं यहाँ किसी के इरादों पर आरोप नहीं लगा रहा हूँ, और मैं किसी के इरादों को बदनाम नहीं कर रहा हूँ; इसमें एक छिपी हुई, एक छिपी हुई सज़ा है।

कोष्ठक में। अपराध। हम आदम में दोषी हैं। इसलिए, हम भ्रष्ट हैं, और इसलिए हम पाप करते हैं, और हम दोषी हैं।

अन्यथा, आपमें बिना किसी अपराध के जन्मजात भ्रष्टाचार है? इसका क्या कारण है? क्या ईश्वर अन्यायी है? वास्तव में, जैसा कि हेल्वेटिक सर्वसम्मति ने कहा, फ़ॉर्मूला कॉन्सेनसस हेल्वेटिका 1675, और टोरेटन, इसके प्रमुख प्रस्तावक ने दावा किया कि प्लेकेयस के सिद्धांत ने वास्तव में, आदम के पाप के आरोपण को पूरी तरह से समाप्त कर दिया, क्योंकि यह वास्तव में भ्रष्टाचार है जो हमें क्रोध के लिए उत्तरदायी बनाता है। हमारे अगले व्याख्यान में, हम इसकी ताकत और आपत्तियों के साथ तत्काल आरोपण का इलाज करेंगे और मूल पाप के सिद्धांत के व्यवस्थित और देहाती निहितार्थों पर आगे बढ़ेंगे।

यह डॉ। रॉबर्ट ए। पीटरसन मानवता और पाप के सिद्धांतों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 18 है, मूल पाप, कैल्विनवाद, पेलीगियनवाद, आर्मिनियनवाद और कैल्विनवाद की ताकत और कमजोरियाँ।